Emerging Trends in Education [Vol. VI - No. 2. February 2016. pp 87-90]

प्राथमिक स्तर : शिक्षक की भूमिका एवं दायित्व

–डॉ0 चन्दा रानी *

प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र के लिए प्रथम प्राथमिकता की शिक्षा है। यह वह पहली सीढ़ी है, जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है। स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि, "मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना महान राष्ट्रीय पाप है और हमारे पतन के कारणों में से एक है। कोई भी राजनीति उस समय तक विफल रहेगी, जब तक कि भारत में जनसाधारण को एक बार भली प्रकार शिक्षित नहीं कर लिया जायेगा।" शिक्षक को युग-निर्माता, बाल-विधाता भी कहा गया है, क्योंकि बालक के कोरे स्लेट के समान कोरे मस्तिष्क पर वह जो अक्षरों से लाइनें बनवा देता है, वे अमिट होती हैं।

भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण संसार में शिक्षण-कार्य को एक उदात्त व्यवसाय माना गया है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में सुशिक्षा की सफलता या असफलता पूर्णतया शिक्षक पर निर्भर करती है। आज देश में चारों ओर चारित्रिक ह्रास दिखाई दे रहा है। स्वतन्त्रता से पूर्व लोग देश-हित में त्याग और निःस्वार्थ भाव से कार्य करने को तैयार रहते थे। तब ईमानदार व सच्चे लोगों को समाज में सम्मान प्राप्त था। भौतिक साधनों के संग्रह और उपयोग को लोग वरीयता नहीं देते थे। मानव-इतिहास की श्रेष्ठतम विभूतियों ने भी 'शिक्षक-शिक्षा' के इस व्यवसाय को अपनाया है। समस्त युगों के समस्त धार्मिक नेताओं तथा समाज-सुधारकों ने इस शिक्षक-शिक्षा के व्यवसाय को अंगीकार करके इसके गौरव में अभिवृद्धि की। बुद्ध, ईसा, गांधी, सुकरात, मुहम्मद, कनफ्यूशियस-ये सभी सच्चे अर्थ में मानव-जाति के शिक्षक थे।

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उसे सभी विषयों की शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प-कला के माध्यम से देनी पड़ती है। इस शिल्पकार का चयन विशिष्ट विद्यालय की स्थानीय और भौगोलिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसलिए प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में सामान्यतः उन्हीं शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है, जो विद्यालयों से सम्बन्धित क्षेत्रों के निवासी होते हैं। प्राथमिक स्तर के शिक्षण-कार्य के लिए पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है। हमारे भारत में एक समय ऐसा भी था, जब सत्य, अहिंसा, सदाचार, सहयोग आदि गुणों को सामान्य व्यक्ति भी जीवन में उतारने के लिए प्रयत्नशील रहता था। प्राथमिक स्तर पर शिक्षण-कार्य के लिए भी शिक्षकों को इन युग-निर्माताओं

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री अग्रसेन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी।

एवं महात्माओं के पद-चिह्नों का अनुगमन करके अपने देश एवं राष्ट्र के लिए बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना होगा। इसलिए आज के शिक्षक को 'एस0 बालकृष्ण जोशी' जी का परामर्श है–"शिक्षक को अपने को केवल श्रमजीवी नहीं समझना चाहिए, जिसका कार्य 10 बजे आरम्भ होता है और 4 बजे समाप्त होता है, जब वह अपने पैरों की धूल झाड़कर जीविका प्रदान करने वाली विद्यालय रूपी फैक्ट्री से बाहर जा सकता है।" शिक्षक का शिक्षण-कार्य एक उदात्त व गरिमामयी व्यवसाय के रूप में होता है। आज मानव का नैतिक आधार ही नष्ट हो गया है। आज देशकाल की परिस्थिति, समय सब प्राचीनता से बिल्कुल हटकर है, उसका स्वरूप ही बदल गया है।

आज इन बदली हुई परिस्थितियों में प्राथमिक स्तर के शिक्षक से क्या अपेक्षा की जाती है? प्राथमिक स्तर का शिक्षक होने के नाते एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए उसका क्या उत्तरदायित्व है? जीवन-मूल्यों तथा चारित्रिक गिरावट के इस वातावरण में शिक्षक क्या भूमिका अदा करे तथा वह क्या करने में स्वयं को सक्षम दिखा सकता है? इन प्रश्नों के उत्तर हम दो रूपों में प्रस्तुत कर सकते हैं–प्रथम रूप में प्राथमिक स्तर के कुछ शिक्षकों का साक्षात्कार व अवलोकन करके उत्तर मिला कि समाज में जब सभी अपने लिए भौतिक सुख-सुविधाएँ जुटाने में लगे हैं, किसी भी प्रकार से धन अर्जित करना उनका लक्ष्य बन गया है, तब उसी समाज में क्यों नहीं शिक्षक भी अपने बाल-बच्चों के लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई तथा विकास के लिए शिक्षण-कार्य को धन-अर्जित करने का एक व्यवसाय बना सकता है। धन-संग्रह करने के लिए कोचिंग का सहारा ले सकता है। उनका यह भी कहना है कि जब समाज में लोग भौतिक संसाधन जुटाने के लिए किसी भी तरह का व्यवसाय कर सकते हैं तो शिक्षक से यह क्यों अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षण-कार्य द्वारा एक उत्तम और उज्ज्वल भविष्य का निर्माता ही बना रहे, दूसरी तरफ कुछ लोग शिक्षण-कार्य के लिए शिक्षक को महत्त्वपूर्ण बताते हैं। उनका कहना है कि समाज स्वस्थ बने, चारों तरफ सामाजिक सुरक्षा और शान्ति बनी रहे। इसके लिए शिक्षक ही एक ऐसा शिल्पकार है, जो समाज को, देश को प्रतिभावान, चरित्रवान और निःस्वार्थ जीवन-मूल्यों को दिशा प्रदान करने वाला यन्त्र (विद्यार्थी) बनाता है।

प्राथमिक स्तर का शिक्षक ही प्रतिभावान व युग-निर्माता तैयार करने वाला श्रेष्ठ मशीनमैन है, जो किसी भी कल-पुर्जे (विद्यार्थी) को जैसा चाहे, वैसा निर्माण कर सकता है। शिक्षक-शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो जीवन के सब क्षेत्रों को प्रभावित करती है। वह बालकों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित होती है। 'राधाकृष्णन् कमीशन' ने शिक्षक-प्रशिक्षण की धारणा में यह कहकर परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल दिया है कि–"सच्ची शिक्षा केवल कुछ पाठों को पढ़ना और स्मरण करना ही नहीं है, वरन् जीवन-यापन एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यों में भाग लेना भी है।"

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों का चयन करने के लिए अध्यापक-शिक्षा की संस्थाओं में अंकों तथा ग्रेडों को मुख्य सहारा न बनाकर अभिक्षमता तथा उपलब्धि को आधार बनाया जाना चाहिए। कुशल एवं उत्तरदायित्व समझने वाला शिक्षक शिक्षण-कार्य में प्राथमिक स्तर पर विभिन्न शिक्षण-साधनों का प्रयोग करके शिक्षा को सरल व ग्राह्य बना सकता है। वह श्रव्य-दृश्य सामग्री, बोर्ड, चार्ट, चॉक, ब्लैक-बोर्ड, मॉडल्स, दूरदर्शन एवं टेपरिकार्डर आदि विभिन्न साधनों का प्रयोग करके शिक्षण-कार्य को विद्यार्थियों के अनुरूप बना सकता है और विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है। उनके अन्दर विभिन्न कौशलों को अर्जित करने में सहायक की भूमिका अदा कर सकता है। एक कुशल शिक्षक शिक्षण-पाठ्यक्रम को आत्मसात् करके आवश्यकता के अनुरूप साधनों का चयन करता है और फिर समयानुसार शिक्षण-कार्य करके विद्यार्थियों को कुशल नागरिक बनाने में अहम् भूमिका निभाता है। वह छात्रों द्वारा सृजनात्मक कार्य, साक्षरता कार्यक्रम, प्रदर्शनी, पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ, अभ्यास द्वारा कौशलों का विकास आदि कार्यों को बड़े ही सुचारु रूप से करा सकता है।

डॉ0 राधाकृष्णन् का कहना है कि–"समाज में शिक्षक का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है। वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं तथा शिक्षण-कौशलों के हस्तान्तरण के उपक्रम के रूप में सभ्यता के प्रकाश को प्रकाशित करने में सहायक होता है।" प्राथमिक शिक्षा आधारभूत शिक्षा है, क्योंकि इसका आधार प्राचीन भारतीय संस्कृति है। यह शिक्षा बालकों की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्ध रखती है। यह शिक्षा देश के सामान्य नागरिकों के लिए है जो राष्ट्रीय जीवन का आधार हैं। इस शिक्षा की समस्त क्रियाओं को हस्त-कौशल के साथ अनुबन्धित किया गया है। उत्पादक-श्रम इस शिक्षा का आधार है। इसीलिए इसे प्राथमिक शिक्षा कहा गया है।

शिक्षक का आदर्श चरित्र ही वह मूल है, जिस पर आज की प्राथमिक स्तर के शिक्षा-प्रणाली की सफलता निर्भर है। शिक्षक को समाज में अपने को चारित्रिक ह्रास से बचाना होगा। विद्यार्थियों को अपने कर्त्तव्य-निष्ठा, साहस, क्षमता व परिश्रम के द्वारा प्रगति व विकास के लिए हर सम्भव कार्य को निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की शिक्षा देना होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं की चिन्ता किये बगैर अपने चारों ओर जो परिग्रह और प्रतिष्ठा के लिए होड़ लगी है, उसे सही-गलत सोचने के योग्य बनाने का कार्य करना होगा। एक योग्य शिक्षक को अपने जीवन में कबीर के इन वचनों का पालन करना होगा–

"साईं इतना दीजिये, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।"

प्राथमिक स्तर के शिक्षक का कार्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। वह राष्ट्र-निर्माता कहलाता है। साथ ही

वह भावी नागरिकों का निर्माता भी कहा जाता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा को सफल बनाने के लिए इस स्तर के शिक्षकों को समय-समय पर निर्देशन एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाये, जिससे आधुनिकतम शिक्षण-कार्यक्रमों की उन्हें जानकारी हो सके।

अन्त में हम कह सकते हैं कि भारत में सबके लिए शिक्षण-अभियान में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण, निरक्षरता में कमी, शैक्षिक अवसरों का लाभ उठाने का प्रावधान, नारी समानता को एक साधन के रूप में, शिक्षा का उपयोग तथा शिक्षा की विषय-वस्तु व प्रक्रिया में सुधार को लक्ष्य बनाया गया है। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए अनेक कदम उठाये जा रहे हैं, जिससे भारत सबके लिए शिक्षा उपलब्ध कराने में समर्थ हो सकेगा। अतः भारत के प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वे इस ओर ध्यान दें और प्राथमिक शिक्षा जो शिक्षा की नींव है, उसको (जड़ को) सदैव के लिए मज़बूत बनाने में सहयोग व दिशा दें। अतः आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही बच्चों के सामाजिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास किया जाये क्योंकि किसी भी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के मूल्यों के उत्तरोत्तर वृद्धि और चारित्रिक विकास पर निर्भर करती है।

सन्दर्भ :

- पाण्डेय, डॉ0 बी0बी0 एवं पाण्डेय, डॉ0 ए0के0 (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास और सामयिक समस्याएँ, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
- बाजपेयी, एल0बी0 (2000), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियाँ, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद, लखनऊ।
- भूषण, शैलेन्द्र एवं वार्ष्णेय, अनिल कुमार (2005), शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2।
- वार्षिकी, जागरण : (2012)।
- वार्षिकी, जागरण : (2014)।